International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 11, November 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

प्राथ मक वद्यालय के शक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन

लाल बहादुर
शोधार्थी, शक्षाशास्त्र,श्री वैंकटेश्वर व0 व0 गजरौला, अमरोहा
डा0 भेद पाल गंगवार,
प्रोफेसर, शक्षाशास्त्र,श्री वैंकटेश्वर व0 व0 गजरौला, अमरोहा

सारांश

प्राथ मक शक्षा वकासशील देश की मूलभूत आवश्यकता है। भारत भी एक वकासशील देश है। सरकार भारत सरकार सभी को शक्षा का अ धकार देती है। इस अ धनियम में, सरकार। उनका कहना है क भारत में जन्म लेने वाले हर बच्चे को मुफ्त और अनिवार्य शक्षा मलेगी। इस लक्ष्य को पूरा करने के लए हमें अपनी शक्षा प्रणाली में सुधार करना होगा। हमें अच्छी गुणवत्ता वाली शक्षा की जरूरत है। प्रभावी शक्षण के माध्यम से ही अच्छी गुणवत्ता वाली शक्षा अर्जित की जा सकती है। शै क्षक नवाचार शक्षकों द्वारा कए जाते हैं, जो बच्चों को देश की राष्ट्रीय आकांक्षा और सामाजिक जरूरतों का सामना करने के लए प्रभावी तरीके से पढ़ाते हैं। शक्षकों के पास एक उ चत व्यक्तित्व का वकास नहीं होता है और वे ईमानदारी और ईमानदारी से कर्तव्यों का पालन करने के लए एक प्रभावी और अच्छी तरह से सू चत शक्षक बन जाते हैं। शक्षक के पास पहले मानव-निर्माण प्र क्रया को करने के लए 'त्रि-आयामी' जिम्मेदारियां हैं, माध्य मक, राष्ट्र, समाज और बच्चों के प्रति उसका कर्तव्य है, तीसरा, उसके पेशेवर वकास में उसकी अपनी भू मका धारणा है।

मुख्यशब्द: प्राथ मक शक्षा, वकासशील देश, मानव-निर्माण, राष्ट्रीय आकांक्षा, सामाजिक जरूरतों

प्रस्तावना

शक्षक पानी के फव्वारे की तरह होते हैं जो पानी दू षत होने पर छात्रों के ज्ञान की प्यास बुझाने के लए होते हैं, परिणामस्वरूप छात्रों को प्रभा वत करते हैं, अंततः पूरी पीढ़ी को प्रभा वत करते हैं। इस लए शक्षकों के बीच गुणात्मक पहलुओं को सुधारने के लए शक्षकों की शक्षण प्रभावशीलता की गुणवत्ता में सुधार करना आवश्यक है। यह भी देखा गया है क जिन लोगों का शै क्षक सीढ़ी के सभी स्तरों और चरणों में छात्रों पर जबरदस्त प्रभाव है, उनसे राष्ट्र की उम्मीदें और कल के निर्माता होने की उम्मीद है। इस संदर्भ में व्यक्तित्व और शक्षण प्रभावशीलता के क्षेत्र में कुछ शोध कए गए हैं। शक्षक मानव-निर्माण की प्र क्रया में लगे हुए हैं, जो मानवता की सर्वोच्च सेवा है। दुनिया के शै क्षक योजनाकारों और अर्थशास्त्रियों ने भावनात्मक रूप से संतु लत शक्षकों के माध्यम से शक्षा पर निवेश के महत्व को स्वीकार कया है, जिनका व्यक्तित्व और संगठनात्मक वातावरण उनके छात्रों के जीवन को बदलने के कार्यों को क्रयान्वित करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। सभी के लए शक्षा पर वश्व घोषणा, ता क बच्चों की बुनियादी जरूरतों को प्रभावी तरीके से पूरा कया जा सके। प्राथ मक शक्षा को एक आवश्यक शक्षण उपकरण और बुनियादी शक्षा के रूप में परिभा षत कया गया है जिसमें स्वयं जी वत रहने के लए आवश्यक लोग शा मल हैं, सम्मान के साथ जीने और काम करने के लए, निर्णयों को स्वीकार करने के लए जीवन में गुणवत्ता में सुधार करने के लए, और सीखने के लए जारी रखने के लए गुणवत्ता शक्षा के कुछ गड्ढों से पी ड़त रहा है सभी के लए शक्षा बहुत अच्छी है, सभी के लए गुणात्मक शक्षा एक और कहानी है।

छात्रों के लए शक्षक और दिशा-निर्देश कुछ प्रमुख कारक हैं जिनका छात्रों के सीखने पर प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में, यह एक मौ लक सत्य है क शक्षा जो ज्ञान से संबं धत है, यह जानती है क स्कूल में या वशेष शक्षक के कक्षा कक्ष में छात्रों द्वारा छोड़ी गई योग्यता, मान सकता और इससे जुड़े मूल्य कस

प्रकार प्रभा वत होते हैं। जब भी छात्र स्कूल या कक्षा कक्ष में प्रवेश करते हैं, जो कसी जटिल और आनुवं शक संरचना के संयुक्त प्रभाव का परिणाम रहा है, ज्ञान, पता कैसे, योग्यता, मान सकता और संबं धत मूल्यों को छात्रों के दिमाग में पैदा कया जाता है। घरों की तुलना में वक सत वातावरण। कसी राष्ट्र का भाग्य उसकी कक्षा में शक्षकों की गुणवत्ता से अ धक आकार लेता है। एक राष्ट्र के चरित्र के निर्माण में शक्षक की भू मका की धारणा बहुत महत्वपूर्ण है, जो शक्षकों के व्यक्तित्व का परिणाम है और पर्यावरण सीखने के लए संगठनात्मक वातावरण के रूप में काम करता है। भारत, एक वकासशील देश होने के नाते, यह अनाकर्षक हो गया है और भारत को नए सरे से, प्रगतिशील बनाने और देश की लाभकारी जड़ों को मजबूत करने के लए लाखों स्कूली बच्चों को बेहतर पेशेवर, व्यावसायिक और सामान्य शक्षा प्रदान करने की तत्काल आवश्यकता है। शक्षक को एक प्रभावशाली व्यक्तित्व का वकास करना होगा और एक प्रभावी संगठनात्मक वातावरण वक सत करना होगा, ता क एक प्रभावी और अच्छी तरह से सू चत शक्षक अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और ईमानदारी से निभा सकें।

व्यक्तित्व के निर्धारक

मनुष्य व भन्न मापदंडों की एक जटिल प्रणाली का उपोत्पाद है, जो लगातार व्यक्तित्व के साथ बातचीत करता है और उसे आकार देता है। कुछ महत्वपूर्ण निर्धारक हैं जिनमें आनुवं शक, सामाजिक और सांस्कृतिक निर्धारक शा मल हैं। यद्य प व्यक्तित्व के वकास में इन कारकों के योगदान के संबंध में आनुवं शकतावाद और पर्यावरण वदों के बीच निरंतर कल्याण रहा है। इस संदर्भ में व भन्न अध्ययनों ने निष्कर्ष निकाला है क एक व्यक्ति वंशानुगत और पर्यावरणीय प्रभावों के सह-अनिवार्य संपर्क का उपोत्पाद है। आनुवं शकता कसी भी व्यक्तित्व वशेषता के वकास की क्षमता का आधार प्रदान करती है। पर्यावरण में प्र शक्षण और अनुभव लक्षणों के वकास के लए प्रवाहकीय साबित हुए हैं। काया के वकास

के लए आनुवं शकता, मोटर-संवेदी उपकरण और बु द्ध के स्तर, वशेष रोग और प्रतिकूल वातावरण की मनमौजी वशेषताएं ईश्वर की वरासत को दबा सकती हैं ले कन अनुकूल वातावरण खराब आनुवं शकता का एक आदर्श वकल्प नहीं है। आनुवं शकता, स्थापना एक वशेषता के अ धकतम वकास की सीमा निर्धारित करती है, जिसे सर्वोत्तम वातावरण प्रदान करके पार नहीं कया जा सकता है। अच्छा प्र शक्षण और पर्याप्त अनुभव, बच्चों के प्रदर्शन में सुधार सुनिश्चित करता है। सभी मनोवैज्ञानिकों ने बताया है क बु द्ध शक्षा के प्रकार, माता- पता के व्यवसाय और निवास स्थान जहां वह ग्रामीण या शहरी है आदि से प्रभा वत होती है। सांस्कृतिक वातावरण संचयी रूप से व्यक्तित्व लक्षणों के वकास पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रारं भक बचपन में अनुकूल वातावरण प्रदान करके बु द्ध में पर्याप्त अंतर वक सत कया जा सकता है, व्यक्तित्व वकास के लए कुछ पूर्व-आवश्यकताएं हैं।

सामाजिक निर्धारक:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सभी मनुष्य अपनी जै वक आवश्यकताओं के संबंध में समान रूप से पैदा होते हैं। सामाजिक वातावरण से मतभेद पैदा होते हैं जिसके तहत अपे क्षत जरूरतों को पूरा कया जाता है। सामाजिक और घरेलू वातावरण व्यक्तित्व वकास को काफी हद तक प्रभा वत करता है।

गृह की भू मका:

पहला वातावरण जो बच्चा घर में चलने पर उसे प्रभा वत करता है। बच्चे की पसंद-नापसंद, लोगों के बारे में रूढ़िवादिता, सुरक्षा का आश्वासन और सशर्त भावनात्मक प्रति क्रयाएं, इन सभी को बचपन में ही आकार दिया जाता है। कई अनुभवजन्य साक्ष्य हैं, जो इस बात का समर्थन करते हैं क बचपन के अनुभव जीवन के बाद के चरण में व्यक्तित्व के निर्णायक निर्धारक होते हैं। दूसरे, यह सामान्य नैतिक मूल्यों के

संबंध में बाल वकास और पारिवारिक जीवन के इसके बहुमुखी पहलू पर सभी अध्ययनों द्वारा स्था पत कया गया है, जिसमें माता- पता के बीच उनकी संतुष्टि के लए काफी हद तक सामंजस्यपूर्ण संबंध शा मल हैं। अच्छी नैतिक पृष्ठभू म से आने वाले बच्चे समूह के औसत कशोरों की तुलना में अपने माता- पता से बेहतर समायोजित, अ धक आसन्न और अ धक संतोषजनक थे। दूसरी ओर, बच्चे त्याग पैटर्न के थे, आमतौर पर, उनके सामाजिक परिवेश में गरीब समायोजित होते थे।

तीसरा, आ र्थक कारक भी व्यक्तित्व के वकास को प्रभा वत करते हैं। यह देखा गया है क माता- पता की गरीबी और बच्चों की वैध जरूरतों को पूरा करने के लए पैसे की कमी अक्सर बच्चों में निराशा के वकास का कारण बनती है।

स्कूल और शक्षक की भू मका:

स्कूल बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है क्यों क एक बच्चे के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा स्कूल के दौरान, 6 और 20 वर्ष के आयु वर्ग के भीतर व्यतीत होता है। हालाँ क वह पसंद-नापसंद, अनुरूपता और वद्रोह की प्र क्रया को जारी रखता है, बदलते परिदृश्य में दुनिया और खुद की धारणा प्राप्त करता है। शक्षक द्वारा कक्षा में अपनी भू मका निभाने का तरीका निश्चित रूप से कक्षा में भावनात्मक वातावरण को प्रभा वत करेगा। एक अ धनायकवादी शक्षक से स्था पत और निरंकुश वातावरण की अपेक्षा की जाती है जो छात्र के व्यवहार में शत्रुता और आक्रामकता पैदा करना सुनिश्चित करता है। उसी तरह, एक लोकतांत्रिक शक्षक द्वारा स्था पत लोकतांत्रिक व्यवस्था रचनात्मक, वचारशील और सहयोगात्मक व्यवहार की ओर ले जाती है। यह देखा गया है क लोकतांत्रिक समूह में प्रति क्रयात्मक शब्द की गुणवत्ता बेहतर होती है। ये सभी 1939 में लॉइन, ल पट और व्हाइट द्वारा शास्त्रीय प्रयोग के परिणाम थे। घर और स्कूल के अलावा, कई अन्य सामाजिक कारक हैं जिनमें भाषा,

सामाजिक भू मका, आत्म-अवधारणा, पहचान और बच्चे के व्यक्तित्व का भी वकास में पारस्परिक संबंध शा मल हैं।

सांस्कृतिक निर्धारक:-

ई.बी. टेलर, एक प्र सद्ध मानव वज्ञानी ने संस्कृति को परिभा षत कया, "यह वह जटिल संपूर्ण है जिसमें ज्ञान, वश्वास, नैतिकता, कानून, प्रथा और कई अन्य क्षमताएं और आदतें शा मल हैं जो मनुष्य द्वारा समाज के सदस्य के रूप में प्राप्त की जाती हैं।" हमारे दृष्टिकोण, जरूरतें, आकांक्षाएं हमारी संस्कृति द्वारा नियंत्रित होती हैं। C. ने ठीक ही कहा है, "संस्कृति हमारे जीवन को हर मोड़ पर नियंत्रित करती है", तीन पक्षों पर एक सांस्कृतिक समूह के सदस्यों में सामान्य वशेषताएं वक सत होती हैं: -

क) प्रारं भक अनुभव, जो बच्चा संस्कृति में प्राप्त करता है।

b) बच्चों के पालन-पोषण की प्रथाएं सांस्कृतिक रूप से प्रतिरू पत होती हैं ता क बच्चे समाज से शुरुआती अनुभव प्राप्त कर सकें और वकास में मदद कर सकें।

ग) समान अनुभव समान व्यक्तित्व वन्यास की ओर ले जाते हैं। संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व वकास को निम्न प्रकार से प्रभा वत करती है:-

1. सीखने की प्र क्रया के माध्यम से मूल्य वचारों, वश्वासों और रीति-रिवाजों का अंतर्राष्ट्रीयकरण, जो बच्चे में व शष्ट व्यक्तित्व वशेषताओं को वक सत करता है।

2. संस्थागतकरण:- व भन्न धा र्मक प्रार्थनाओं, पुस्तकों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का वकास।

मानव वज्ञानियों ने व्यक्तित्व वकास के मूल्यांकन पर अध्ययन कया है। मार्गरेट मीड के निष्कर्षों के अनुसार, जिन्होंने समोआ में कशोरों पर एक अध्ययन कया है; एक आदिम संस्कृति, सुरक्षा की भावना के वकास के लए मुख्य कारकों में से एक लग रहा था। वकास और आकार निर्धारित करें।

व्यक्तित्व का वर्गीकरण:

एक प्र सद्ध मनोवैज्ञानिक ने लोगों को तीन प्रकारों में वर्गीकृत कया:

(i) अंतर्मुखी:- अंतर्मुखी बहुत शर्मीले, संवेदनशील, आत्मकेंद्रित, आत्म-जागरूक, असामाजिक, साह सक कार्य करने वाले होते हैं, वे अक्सर सोचने तक ही सी मत रहते हैं, लेखन में अच्छे होते हैं, चंताओं की ओर झुकाव रखते हैं और लचीलेपन की कमी होती है। वे दूसरों के साथ घुलने- मलने से कतराते हैं। वे आत्मकेंद्रित हैं और खुद को अनैतिक रूप से सी मत रखते हैं। वे अच्छे नेता नहीं बन सकते क्यों क उन्हें अक्सर अपने ही मामलों में व्यस्त रखा जाता है। वे दूसरों की संगति में आसानी से श र्मंदा हो जाते हैं। वे डरपोक और सावधान हैं। आरक्षण और दिवास्वप्न उनकी महत्वपूर्ण वशेषताएं हैं।

(ii) बहिर्मुखी :- बहिर्मुखी बहुत ही सामाजिक, साहसी, सहयोगी और साहसी होते हैं। वे अक्सर चंताओं से मुक्त होते हैं और भाषण में प्रवाह के साथ धन्य होते हैं। वे स्वयंभू लोग हैं। वे अ धक बाहरी यानी दुनिया की ओर प्रवृत्त होते हैं। वे दूसरों के अनुकूल हैं। उन्हें मीटिंग्स और सोशल गैदरिंग पसंद है। वे अक्सर अच्छे नेता और सामाजिक कार्यकर्ता बन जाते हैं।

(iii) उभयचर:- कोई भी पूरी तरह से अंतर्मुखी या बहिर्मुखी नहीं होता है। हर कोई दोनों का मश्रण है। कुछ मुख्य रूप से बहिर्मुखी होते हैं और लगभग संतु लत होने पर उन्हें उभयचर कहा जाता है। वे अपने कार्यों के साथ संतु लत मान सकता के लक्षण हैं।

निष्कर्ष

दुनिया भर में गुणवत्तापूर्ण शक्षा की प्राप्ति के लए शक्षक आवश्यक हैं। शक्षक को कसी भी कोण से देखा जाता है, वह एक बच्चे के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण मानवीय पात्रों में से एक प्रतीत होता है। इस लए एक बच्चे की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है क वह स्कूल प्रणाली के माध्यम से यात्रा करते समय अपने शक्षकों के साथ व भन्न बैठकों में क्या करता है। स्कूल प्रणाली में शक्षक की प्रभावशीलता या अन्यथा उसके छात्रों के जीवन में अभी और भ वष्य में स्पष्ट होगी। अध्ययन के निष्कर्षों ने शक्षण प्रभावशीलता पर संगठनात्मक वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव का खुलासा कया। इस लए, स्कूल का माहौल बनाने में सभी स्कूल स्टाफ की महत्वपूर्ण भू मका होती है, ले कन प्रशासकों की भू मका अ धक महत्वपूर्ण होती है। प्रशासक मत्रवत और सहयोगात्मक वातावरण स्था पत करके शक्षण प्रभावशीलता को बढ़ा सकते हैं। "इस लए, एक सकारात्मक स्कूल माहौल बनाने की आवश्यकता काफी स्पष्ट है। स्कूल की प्रभावशीलता पर शोध एक सकारात्मक स्कूल वातावरण के महत्व का समर्थन करता है, जिसे अक्सर स्कूल की जलवायु कहा जाता है, जहां प्रभावी शक्षण और सीखना होता है। एक सकारात्मक स्कूल माहौल स्था पत करने की जिम्मेदारी प्रं सपल के साथ शुरू होती है, जो सीखने के लए अनुकूल माहौल को वक सत करने और बनाए रखने में मार्गदर्शन प्रदान करती है। दूसरी ओर, शक्षक व्यवहार उनकी प्रभावशीलता में एक महत्वपूर्ण भू मका निभाता है। शक्षक कसी भी राष्ट्र की शक्षा प्रणाली के महत्वपूर्ण स्तंभ होते हैं। उन्हें राष्ट्र निर्माता माना जाता है। इतना भारी काम करने के लए उन्हें शारीरिक, मान सक, आ र्थक और सामाजिक रूप से संतु लत होना चाहिए। अतः यह कहा जा सकता है क कसी भी संगठन में जहाँ अनुकूल वातावरण या वातावरण होता है, शक्षक श्रेष्ठ होते हैं। व्यक्तित्व एक व्यक्तिगत जीवन का खाका है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अरो कयादॉस **(2015)** शक्षकों की भावनात्मक बु द्ध पर व्यक्तित्व का प्रभाव। एडुट्रैक्स, **5(12), 25- 30**।

राय **(2015)** प्राथ मक स्तर पर शक्षकों की प्रभावशीलता को बढ़ावा देने के लए एक प्रेरणा पैकेज का वकास: स्वतंत्र अध्ययन। भुवनेश्वर; शक्षा के क्षेत्रीय संस्थान **(DPEP)** अध्ययन।

श्रीवास्तव **(2015)** मनोवैज्ञानिक परीक्षण। लंदन, मैक मलान प्रेस।

जैन **(2016)** । शक्षक प्रभावशीलता में वृ द्ध, यूनेस्को की रिपोर्ट (पार्ट्स: इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एजुकेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एजुकेशनल प्लानिंग।

कार्लो और जोसे फना **(2017)** । पर्सनै लटी एंड टी चंग: एन इन्वेस्टिगेशन इन प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स पर्सनै लटी, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, **2(17), 161-171**।

नेवा **(2017)** कॉलेज शक्षकों की शक्षक प्रभावशीलता। शक्षा में परिप्रेक्ष्य का जर्नल, **21(2), 105-118**।

राजीव और रघुवीर **(2017)**। शक्षक और उनके शक्षण को एक नई संभावना की आवश्यकता है। दिल्ली, र व बुक्स कंपनी.

श्रीधर और बडीई **(2017)** एसे संग प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग नीड्स। जर्नल ऑफ इं डयन एजुकेटर, एनसीईआरटी, **26(1), 8-11.**

दंडपा ण **(2018)** तेहरान, क़ुद्स शहर के शक्षा वभाग के शक्षकों के बीच संगठनात्मक माहौल और नौकरी की संतुष्टि के बीच संबंधों की जांच करें। इं डयन जर्नल ऑफ फंडामेंटल एंड एप्लाइड लाइफ साइंसेज, **5(52), 3215- 3224**।

इंदिरा **(2018)** सामाजिक संबंधों पर व्यक्तित्व प्रभाव। व्यक्तित्व और सामाजिक मनो वज्ञान की पत्रिका, **74(6), 1531-1544**।

कौर **(2018)** नियंत्रण की आंतरिक और बाहरी स्थितियों का आकलन करने के लए व्यक्तित्व वशेषताओं और व्यक्तियों के नियंत्रण का स्थान। पीएच.डी. थी सस शक्षा, कानपुर वश्व वद्यालय, कानपुर।